एम.ए. हिंदी (चतुर्थ सेमेस्टर)
CC-A10- प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य - 2

पूर्णांक:100 अंक

आंतरिक मूल्यांकन : 30 अंक

लिखित : 70 अंक

Course ID	**241/HIN/CC410**	**Credit**
Course Title	**प्राचान एव मध्यकालान काव्य - 2**	4

पाठ्यक्रम के उद्देश्य और परिणाम:

1.'पृथ्वीराज रासो' के अध्ययन के माध्यम से आदिकालीन रासो काव्यों की प्रवृत्तियों को समझना।

2.विद्यापति के अध्ययन के माध्यम से मैथिल कोकिल की रचनाओं में संचरित श्रृंगार के विभिन्न् पक्षों को हृदयगम किया जाता है।

3.मध्यकाल के अन्तर्गत परिगणित भक्तिकाल को साहित्य में 'स्वर्णयुग' के नाम से जाना जाता है। अतः यहाँ पर काव्य जगत के महान नायकों कबीर, सूर, तुलसी के काव्य के अध्ययन के माध्यम से अनुभूति, अभिव्यक्ति और वैचारिकता के उत्कर्ष को आत्मसात् करना एवं जानना।

4.रीतिकाल के अध्ययन के माध्यम से श्रृंगारिकता के विविध पक्षों के अध्ययन के साथ-साथ वीर रसात्मक कविताओं के अध्ययन की प्रेरणा को भी अधिगम किया जाता है।

पाठ्यक्रम:

(क) व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य पुस्तकें

सूरदास:भ्रमरगीत सार : संपादक रामचन्द्र शुक्ल - पाठ्य पद-21 से 70-कुल 50 पद

तुलसीदास:कवितावली : व्याख्या के लिए निर्धारित पद

बालकाण्ड-1 से 7, 17, 20, 22

अयोध्या काण्ड-1, 2, 7, 11, 12, 19 से28

उत्तरकाण्ड- 26 से 60

बिहारी :बिहारी रत्नाकर- सं. जगन्नाथदास रत्नाकर- (निर्धारित दोहे)- 1, 2, 3, 4, 11, 13, 15, 19, 20, 21, 25, 31, 32, 38,42, 45, 46, 51, 42, 53, 54, 55, 60, 61, 66, 67, 69, 70, 71, 73, 74, 75, 76, 78, 83, 85, 87, 88, 94, 95, 102, 103, 104, 112, 121, 141, 142, 151, 154, 155, 171, 782, 188, 190, 191, 192, 201, 202, 207, 217, 225, 227, 228, 236, 251, 255, 285, 299, 300, 301, 303, 3017, 321, 327, 331, 341, 347, 349, 357, 363, 386, 388, 406, 407, 432, 472, 519, 557, 570, 576, 588, 606, 611, 624, 635, 677, 681, 713-100 दोहे।

(ख) आलोचनात्मक प्रश्न:

सूरदास: भ्रमरगीत परम्परा और सूर का भ्रमरगीत , सूर की भक्ति भावना , सूर का श्रृंगार वर्णन , सूर का वात्सल्य वर्णन , सूर की भाषा-शैली , सूर का गीतियोजना , भ्रमरगीत का प्रतिपाद्य

तुलसीदास: तुलसीदास की भक्तिभावना , तुलसीदास की सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि , तुलसीदास की प्रासंगिकता , तुलसीदास की समन्वय भावना , कवितावली का काव्य रूप , कवितावली का काव्य सौष्ठव ,तुलसी की लोकमंगल-भावना

बिहारी : सतसई काव्य परम्परा और बिहारी सतसई , मुक्तक काव्य परम्परा और बिहारी , बिहारी का श्रृंगार वर्णन,बिहारी का सौन्दर्यबोध ,बिहारी की बहुज्ञता , बिहारी का शिल्प पक्ष

सहायक ग्रंथ:

1.तुलसी दर्शन मीमांसा-उदयभानु सिंह, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

2.तुलसीदास-चन्द्रबली पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

3.तुलसी साहित्य के सांस्कृतिक आयाम- डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा, हिंदी, साहित्य संस्थान, रोहतक।

4.तुलसी का मानस- डॉ. मुंशीराम शर्मा, कानपुर

5.सूर और उनका साहित्य- डॉ. हरिवंशलाल शर्मा, भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़।

निर्देश-1.खंड क में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों में से आंतरिक विकल्प के साथ एक-एक अवतरण व्याख्या के लिए पूछा जाएगा। परीक्षार्थी को तीनों अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या के लिए 5 अंक निर्धारित है। पूरा प्रश्न 15 अंक का होगा।

2.प्रत्येक पाठ्य पुस्तक के लिए खंड- ख में निर्धारित आलोच्य विषयों में से कोई छः प्रश्न पूछे जाएंगे। परीक्षार्थी को उनमें से कोई तीन प्रश्न करने होंगे। तीनों प्रश्न तीन अलग-अलग पाठ्य पुस्तकों पर आधारित होने चाहिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए 10 अंक निर्धारित हैं। पूरा प्रश्न 30 अकं का होगा।

3.पूरे पाठ्यक्रम में से कोई 8 लघुत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से परीक्षी को 200 शब्दों में किहीं पांच प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न चार अंक का होगा। पूरा प्रश्न 20 अंकों का होगा।

4. पूरे पाठ्यक्रम में से 5 वस्तुनिष्ठ अनिवार्य प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न एक-एक अंक का होगा।

एम.ए. हिंदी (चतुर्थ सेमेस्टर)
CCA11-नाटक एवं रंगमंच

पूर्णांक - 100

आंतरिक मूल्यांकन - 30

लिखित - 70

Course Code	CORE COURSE	Credit
Course Title	नाटक एवं रंगमंच	4

पाठ्यक्रम उद्देश्य:

- हिंदी साहित्य के अंतर्गत नाटक का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना
- विभिन्न नाटककारों और उनके नाटकों का विशिष्ट ज्ञान
- रंगमंच का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना (भारतीय,पाश्चात्य और लोक सांस्कृतिक)

पाठ्यक्रम परिणाम:

- हिंदी साहित्य के नाटकों का विशिष्ट ज्ञान
- प्रमुख नाटककारों और नाटकों की समझ विकसित होगी

पाठ्यक्रम : **खंड क**

- हिंदी नाटक एवं रंगमंच : परिचयात्मक अध्ययन , हिंदी नाटक: उद्भव और विकास, नाटक और रंगमंच का अंत संबंध , हिंदी रंगमंच का उद्भव और विकास , नाटक में दृश्य - श्रव्य तत्वों का सामंजस्य

खंड – ख

- हिंदी रंगमंच , रंगशाला, अभिनेता, निर्देशक, दर्शक ,रंग सज्जा, पारसी , रंगमंच , पृथ्वी थियेटर ,नुक्कड़ नाटक इप्टा, नौटंकी प्रमुख संस्थाएं

खंड – ग

पाठ्य पुस्तकें-

1)भारत दुर्दशा:भारतेंदु हरिश्चंद्र

2)अंधा युग : धर्मवीर भारती

3)बकरी : सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

आलोच्य विषय –

- अंधा युग - नाटक - काव्य की कसौटी पर मूल्यांकन, मूल संवेदना, नामकरण की सार्थकता , प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण।
- बकरी - प्रतिपाद्य, प्रतीकात्मकता , युगीन परिदृश्य,अभिनेयता
- भारत दुर्दशा- प्रतिपाद्य , प्रतीकात्मकता, युगीन परिदृश्य अभिनेयता

निर्देश –

1.खड़ क में से कुल तीन दीर्घ प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से परीक्षार्थी को एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। प्रत्येक पाठ्य-पुस्तक के लिए खंड ग में से निर्धारित आलोच्य विषय में से आंतरिक विकल्प के साथ दो दीर्घ प्रश्न पूछे जाएंगे। दोनों प्रश्न करना अनिवार्य है। इस प्रकार परीक्षार्थी को कोई तीन प्रश्न दीर्घ प्रश्न करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 9 अंक निर्धारित होंगे पूरा प्रश्न 27 अंकों का होगा।

2. खंड ख में निर्धारित टिप्पणियों में से कोई आठ लघुत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से परीक्षार्थी को 250 शब्दों में से किन्ही पांच प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न चार अंक का होगा। पूरा प्रश्न 20 अंक का होगा।

3. खंड ग में निर्धारित पाठ्य- पुस्तकों में से तीन- तीन अवतरण सन्दर्भ सहित व्याख्या के लिए पूछे जाएंगे जिनमें से परीक्षार्थी को किन्हीं तीन की व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक पुस्तक में से कम से कम एक व्याख्या करना अनिवार्य है। प्रत्येक व्याख्या के लिए पांच अंक निर्धारित है। पूरा प्रश्न 15 अंक का होगा।

4.पूरे पाठ्यक्रम से 8 वस्तुनिष्ठ अनिवार्य प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न एक-एक अंक का होगा।

सहायक पुस्तकें:

1.रंगमंच बलवंत गार्गी

2. हिंदी रंगमंच का इतिहास चंदूलाल दुबे

3. नाटक के रंगमंच प्रतिमान वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी

4. रंगदर्शन नेमिचंद्र जैन

5.भारतीय रंगमंच का विवेचनात्मक इतिहास लक्ष्मीनारायण लाल

6. आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच नेमिचंद्र जैन

7. भारतेंदु की नाट्य कथा प्रेमनारायण शुक्ल

8. भारतेंदु युगीन नाटक: सन्दर्भ सापेक्षता रमेश गौतम

9. अंधा युग और भारती के अन्य नाटक प्रयोग जयदेव तनेजा

241/HIN/DS401

एम.ए. हिंदी (सेमेस्टर चतुर्थ)

DSE04- हिंदी भाषा एवम तकनीकी कौशल

पूर्णांक:75 अंक

आंतरिक मूल्यांकन : 25

लिखित : 50

Course ID	241/HIN/DSE404	Credit
Course Title	हिंदी भाषा एवम तकनीकी कौशल	3

पाठ्यक्रम उद्देश्य-

विभिन्न प्रकार के पत्रों (सरकारी-अर्द्धसरकारी एवं व्यावहारिक पत्र) का विश्लेषणात्मक एवं कौशलपरक ज्ञान।

जनसंचार के विभिन्न माध्यमों का परिचय।

पाठ्यक्रम परिणाम:

पत्र लेखन तथा सरकारी तथा प्राइवेट कार्यालय में कार्य करने के अनुरूप कौशल प्रदान करना।

विभिन्न संस्थाओं के लिए प्रोफाइल लेखन सम्बन्धी कौशल प्रदान करना।

<u>पाठ्यक्रम:</u>

इकाई-1 - कार्यालयी आदेश ,कार्यालयी ज्ञापन, पल्लवन ,संक्षेपण ,अधिसूचना एवं संकल्प ,प्रारूप (मसौदा लेखन) drafting

इकाई-2:पत्र लेखन-प्रयोजन और प्रकार (औपचारिक एवं अनौपचारिक) , सरकारी पत्र , अर्द्ध सरकारी पत्र , व्यावसायिक पत्र ,निमंत्रण पत्र ,बधाई पत्र

इकाई-3:विज्ञापन का अर्थ और परिभाषा , विज्ञापन के प्रकार (मुद्रित, रेडियो, टेलीविजन) , विज्ञापन का वर्गीकरण (निश्चित पाठक-श्रोता, दर्शक वर्ग, भौगोलिक क्षेत्र, प्रयुक्त विज्ञापन माध्यम)

इकाई-4:अनुवाद : परिभाषा अर्थ एवं स्वरूप , अनुवाद का महत्त्व ,अनुवाद के प्रकार ,अनुवाद के क्षेत्र ,अनुवाद की उपयोगिता

उपयोगी पुस्तकें-

1. राजभाषा हिंदी- कैलाश चंद भाटिया, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
2. प्रशासनिक हिंदी- महेश चंद्र गुप्त, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. व्यावहारिक हिंदी और स्वरूप- वाणी प्रकाशन हिंदी, नई दिल्ली
4. व्यवहारिक पत्र-लेखन कला- डॉ. डी.एस. पोखरिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

5. प्रयोजन मूलक कामकाजी हिंदी- डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया, तक्षशिक्षा प्रकाशन, नई दिल्ली

6. व्यावसायिक हिंदी- डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली

7. जनमाध्यम और पत्रकारिता, प्रवीण दीक्षित, सहयोगी साहित्य संस्थान, कानपुर

8. पत्रकार कला, विष्णुदत्त शुक्ल, सहयोगी, प्रकाशन, कानपुर

9. अनुवाद विज्ञान : सिद्धान्त एवं प्रविधि- किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली

10. अनुवाद विज्ञान और संप्रेषण- प्रो. हरिमोहन, तक्षशिक्षा प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली

11. अनुवाद अध्ययन का परिदृश्य देवीशंकर नवीन, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय

निर्देश-

1. पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थियों को कुल चार प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक खंड से कम से कम एक प्रश्न करना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न 8 अंक का होगा। पूरा प्रश्न 32 अंक का होगा।

2. पूरे पाठ्यक्रम से 8 लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से परीक्षार्थियों को लगभग 150 शब्दों में किहीं 4 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का होगा। पूरा प्रश्न 12 अंक का होगा।

3. पूरे पाठ्यक्रम से 6 वस्तुनिष्ठ अनिवार्य प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न एक-एक अंक का होगा।

241/HIN/DS402

एम.ए. हिंदी (चतुर्थ सेमेस्टर)

DSE04-प्रयोजनामूलक हिंदी

पूर्णांक:75

आंतरिक मूल्यांकन : 25

लिखित अंक : 50

Course ID	241/HIN/DSE404	Credit
Course Title	**प्रयोजनामूलक हिंदी**	3

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

1. छात्रों को इस बात की समझ देना कि प्रयोजनमूलक हिंदी का महत्व क्या है और इसका उपयोग कहाँ-कहाँ होता है।

2. छात्रों में भाषा कौशल जैसे सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास करना।

3. कार्यस्थल पर हिंदी के प्रभावी उपयोग के लिए छात्रों को तैयार करना, जैसे सरकारी दफ्तरों, मीडिया, प्रबंधन और तकनीकी क्षेत्रों में।

4. अनुवाद के सिद्धांतों और तकनीकों का ज्ञान प्रदान करना ताकि छात्र विभिन्न भाषाओं से हिंदी में अनुवाद कर सकें और हिंदी से अन्य भाषाओं में अनुवाद कर सकें।

पाठ्यक्रम परिणाम:

1.छात्रों को हिंदी भाषा का व्यावहारिक ज्ञान होगा जिससे वे इसे विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग कर सकेंगे।

2. सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने में दक्षता प्राप्त करेंगे।

3.छात्र अनुवाद करने में सक्षम होंगे और इसके विभिन्न पहलुओं को समझ सकेंगे।

4.छात्र प्रभावी संवाद करने में सक्षम होंगे और विभिन्न संप्रेषण तकनीकों का उपयोग कर सकेंगे।

इकाई -1 : प्रयोजनामूलक हिंदी : अभिप्राय और क्षेत्र

- अर्थ-विस्तार, आवश्यकता और विशेषताएँ
- हिंदी की भूमिकाएँ : राजभाषा, संपर्क भाषा, साहित्यिक भाषा, संचार भाषा, माध्यम भाषा
- पारिभाषिक शब्दावली का निर्धारण एवं सामान्य विशेषताएँ, वर्गीकरण
- भारतीय भाषाएँ , मौखिक और लिखित भाषा का स्वरूप, अंतर
- लिपि-वर्तनी का मानक रूप , शब्द संपदा और उसका मानकीकरण , आधारभूत वाक्य संरचना

इकाई-2 : जनसंचार में हिंदी - जनसंचार माध्यम : विविध आयाम , विज्ञापन और हिंदी , संपादन कला

इकाई- 3 : वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा रूप

- वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी की प्रयुक्तियाँ ,वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली ,वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन

इकाई- 4 : प्रशासनिक पत्राचार, विविध रूप

- प्रारूपण, कार्यालयी पत्राचार, संक्षपेण, टिप्पणी, पल्लवन, प्रतिवेदन

प्रस्तावित पुस्तकेंः

1.हिंदी भाषा का प्रयोजनमूलक स्वरूप : कैलाशचन्द्र भाटिया

2.प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी : कैलाशचन्द्र भाटिया

3.भूमंडलीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी : संपादक पूरनचंद टण्डन, सुनील कुमारी तिवारी

4. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयुक्ति जितेन्द्र वत्स

5.हिंदी, प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद : पूरनचंद टंडन

निर्देश :

1. पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रत्येक इकाई से दो-दो प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थियों को कुल चार प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक खंड से कम से कम एक प्रश्न करना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न 8 अंक का होगा। पूरा प्रश्न 32 अंक का होगा।
2. पूरे पाठ्यक्रम से 8 लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से परीक्षार्थियों को लगभग 150 शब्दों में किहीं 4 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का होगा। पूरा प्रश्न 12 अंक का होगा।
3. पूरे पाठ्यक्रम से 6 वस्तुनिष्ठ अनिवार्य प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न एक-एक अंक का होगा